भारत के जैन शासक, राज्याधिकारी और सामंत

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर
(राष्ट्रपति सम्मानित)
संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद्

भारत के प्रमुख जैन शासकों और राज्याधिकारियों में निम्नलिखित शामिल हैं –

1. **चंद्रगुप्त मौर्य:** मौर्य वंश के संस्थापक, जिन्होंने जैन धर्म अपनाकर श्रवणबेलगोला में अपना जीवन अंत किया।
2. **सम्राट कुमारपाल:** सोलंकी वंश के शासक, जो जैन धर्म के अनुयायी थे और धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध थे।
3. **अमृतचंद्र और हेमचंद्राचार्य:** जैन धर्म के प्रसिद्ध आचार्य, जो शासकों के धार्मिक और राजनीतिक सलाहकार भी थे।
4. **राजा खारवेल:** कलिंग के महान जैन शासक, जो धार्मिक सहिष्णुता और जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रसिद्ध थे।
5. **भोजराजा (धार के परमार शासक):** जैन धर्म के प्रति रुचि रखते थे और उन्होंने जैन ग्रंथों को संरक्षण दिया।
6. **राजा भीमदेव सोलंकी:** गुजरात के शासक, जो जैन धर्म के अनुयायी थे। उनके शासनकाल में जैन मंदिरों का निर्माण हुआ।
7. **विजय नगर के शासक:** विशेष रूप से जैन धर्म के आचार्यों का सम्मान करते थे और जैन स्थापत्य का विकास किया।
8. **विरमगाम के राजा विरमदेव:** जैन धर्म को मान्यता देने वाले शासकों में प्रमुख।
9. **राजा हर्षवर्धन:** यद्यपि मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के समर्थक थे, जैन धर्म का भी सम्मान करते थे।
10. **महाराजा जयसिंह प्रथम (आमेर):** उन्होंने जैन धर्म को संरक्षण दिया और उनके शासनकाल में जैन मंदिरों का निर्माण हुआ।
11. **रणकपुर के शासक धरनकुमार:** वे रणकपुर के प्रसिद्ध जैन मंदिर के निर्माण के लिए जाने जाते हैं।

12. **चामुंड रायः** गंग वंश के मंत्री और अधिकारी, जिन्होंने श्रवणबेलगोला में बाहुबली की विशाल मूर्ति स्थापित करवाई।
13. **महाराजा अकबरः** यद्यपि वे स्वयं जैन नहीं थे, लेकिन उन्होंने जैन धर्म के आचार्यों जैसे हीरविजयसूरी के प्रति सम्मान दिखाया और उनकी शिक्षाओं को अपनाया।
14. **राजा वल्लभदेवः** उन्होंने जैन साहित्य और ग्रंथों को प्रोत्साहित किया।
15. **राजा वंशधरः** उन्होंने जैन धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा रखते हुए जैन ग्रंथों का संरक्षण किया।
16. **राजा धारसेनः** जैन धर्म के अनुयायी और धार्मिक प्रवर्तक, जिनके प्रयासों से जैन धर्म का विस्तार हुआ।
17. **मेवार के शासक कुंभाः** उन्होंने जैन मुनियों और मंदिर निर्माण को प्रोत्साहन दिया।
18. **मलदेव राठौड़ (मारवाड़):** जैन धर्म के समर्थक, जिन्होंने जैन विद्वानों का सम्मान किया।
19. **हसनगंगाः** दक्षिण भारत में जैन धर्म के अनुयायी गंगा वंश के शासक।
20. **राजा सिद्धराज जयसिंहः** गुजरात के सोलंकी वंश के शासक, जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार में योगदान दिया और कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया।
21. **राजा महेंद्रपालः** उन्होंने जैन विद्वानों और संतों का संरक्षण किया और उनकी शिक्षाओं का प्रचार किया।
22. **राजा भोजदेव द्वितीयः** मालवा के शासक, जिनके शासनकाल में जैन धर्म को बढ़ावा मिला।
23. **चोल वंश के शासकः** दक्षिण भारत में कई चोल शासक जैन धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने जैन स्थापत्य कला को समृद्ध किया।
24. **राजा उदयभद्रः** उन्होंने जैन धर्म की शिक्षाओं को अपने राज्य में प्रोत्साहित किया।
25. **चामुंडराय (गंगा वंश):** गंग वंश के मंत्री, जिन्होंने श्रवणबेलगोला में बाहुबली की प्रसिद्ध मूर्ति की स्थापना करवाई।
26. **मंत्री बप्पभट्टि (राष्ट्रकूट साम्राज्य):** राष्ट्रकूट शासकों के मंत्री, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों को शासन व्यवस्था में लागू किया।
27. **पद्मनाभनः** चालुक्य वंश के सामंत, जो जैन धर्म के अनुयायी थे और उन्होंने जैन मंदिरों का निर्माण कराया।

28. **वरदमान सुल्तानः** दक्षिण भारत के सामंत, जिन्होंने जैन साहित्य और स्थापत्य को संरक्षण दिया।
29. **सामंत पुष्पदंतः** प्राचीन जैन अधिकारी, जिन्होंने जैन धर्म के ग्रंथों और प्रचार में योगदान दिया।
30. **कर्पूरदेव (परमार वंश):** मालवा क्षेत्र के सामंत, जिन्होंने जैन धर्म के आचार्यों को संरक्षण दिया।
31. **मंत्री जगदाला (हौसला साम्राज्य):** हौसला वंश के प्रमुख अधिकारी, जिन्होंने जैन साहित्य और मंदिर निर्माण में योगदान दिया।
32. **तेजपाल और वस्तुपालः** गुजरात के प्रसिद्ध मंत्री, जिन्होंने माउंट आबू के दिलवाड़ा मंदिर का निर्माण कराया।
33. **मंत्री जिज्ञासुः** राष्ट्रकूट काल के एक अन्य प्रमुख मंत्री, जिन्होंने जैन धर्म के ग्रंथों के अनुवाद और प्रसार में सहायता की।
34. **नागभट्ट प्रथम (प्रतिहार वंश):** जैन धर्म के संरक्षक सामंत, जिनके शासन में जैन संस्कृति फली-फूली।
35. **सोमेश्वर और मालेश्वरः** ये चालुक्य साम्राज्य के मंत्री थे, जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
36. **धरणेंद्र सामंतः** गंगा वंश के अधिकारी, जिन्होंने जैन मंदिरों के निर्माण और आचार्यों के संरक्षण में योगदान दिया।
37. **कुंदरायः** होयसला साम्राज्य के सामंत, जिन्होंने श्रवणबेलगोला और अन्य स्थानों पर जैन स्थापत्य को बढ़ावा दिया।
38. **जिज्ञासु भट्टारकः** वर्धमान साम्राज्य के प्रमुख अधिकारी, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों को प्रशासनिक कार्यों में लागू किया।
39. **धर्मपाल सामंतः** पाल साम्राज्य के जैन सामंत, जिन्होंने विद्वानों और संतों को संरक्षण दिया।
40. **हेमचंद्राचार्य के संरक्षक सिद्धराज जयसिंहः** गुजरात के सोलंकी साम्राज्य के मंत्री और अधिकारी, जिन्होंने जैन धर्म के साहित्य और स्थापत्य को समृद्ध किया।
41. **मंत्री मंत्रीरामः** चालुक्य साम्राज्य के जैन अधिकारी, जिन्होंने मंदिर निर्माण और धार्मिक शिक्षा के प्रचार में योगदान दिया।

42. **उदयपुर के सामंत मणिभद्र:** जिन्होंने जैन मंदिरों के निर्माण में सहायता की और जैन मुनियों का सम्मान किया।
43. **होयसला साम्राज्य के सामंत बिचलादेव:** जैन धर्म के प्रति गहरी आस्था रखते थे और धार्मिक स्थलों को संरक्षण दिया।
44. **वास्तुपाल और तेजपाल:** गुजराती सामंत, जो न केवल दिलवाड़ा मंदिर के निर्माण के लिए प्रसिद्ध हैं, बल्कि जैन विद्वानों को संरक्षण देने के लिए भी। इन सामंतों ने जैन धर्म के सिद्धांतों—अहिंसा, सत्य और तप—का पालन करते हुए जैन धर्म को जन-जन तक पहुँचाया।
45. **धन्ना मंत्री (राष्ट्रकूट साम्राज्य):** जैन धर्म के संरक्षक, जिन्होंने जैन मंदिरों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
46. **अनुपम चौहान:** मध्यकालीन भारत के जैन सामंत, जिन्होंने जैन मुनियों और विद्वानों को संरक्षण दिया।
47. **भोजराज प्रथम (मालवा):** परमार वंश के एक अन्य सामंत, जो जैन धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे और इसके प्रचार-प्रसार में सहायता की।
48. **सामंत नागरमल (मारवाड़):** जैन स्थापत्य कला और साहित्यिक धरोहरों को संरक्षण देने वाले प्रमुख जैन सामंत।
49. **कर्पूरमणि सामंत:** जिन्होंने दक्षिण भारत में जैन धर्म के मंदिरों और विहारों का निर्माण कराया।
50. **विरमदेव (चालुक्य साम्राज्य):** जिन्होंने जैन धर्म के आचार्यों को संरक्षण दिया और कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया।
51. **सिद्धराज जयसिंह (सोलंकी वंश):** गुजरात के सोलंकी शासक, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया और जैन मठों को आर्थिक सहायता दी। जैन विद्वानों का सम्मान किया।
52. **राजा पृथ्वी राज चौहान (आमेर):** वे जैन धर्म के प्रति श्रद्धा रखते थे और जैन मंदिरों का संरक्षण किया।
53. **ध्याननाथ (गंग वंश):** जिन्होंने गंग वंश के दौरान जैन धर्म के कई मठों का पुनर्निर्माण कराया।
54. **भीमदेव सोलंकी (सोलंकी वंश):** गुजरात के शासक जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार और जैन मंदिरों के निर्माण को बढ़ावा दिया।

55. **विजय सिंग राजपूत (राजपुताना):** एक जैन समर्थक राजा, जिन्होंने जैन धर्म के आचार्यों का सम्मान किया और कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया।

56. **महाराजा राज सिंह (जोधपुर):** राठौर वंश के शासक जिन्होंने जैन धर्म के मठों और संस्थाओं को संरक्षण दिया।

57. **राणा कुम्भा (मेवाड़):** उन्होंने जैन धर्म के मंदिरों का निर्माण कराया और जैन समाज के लिए विभिन्न धार्मिक अनुदान प्रदान किए।

58. **चाणक्य (कौटिल्य):** मौर्य साम्राज्य के प्रमुख मंत्री, जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य को सत्ता में स्थापित करने में मदद की। हालांकि, वे सीधे जैन धर्म के अनुयायी नहीं थे, लेकिन उनके विचारों में धार्मिक सहिष्णुता और नैतिकता का समर्थन था, जो जैन धर्म से मेल खाते थे।

59. **कुंडलि सामंत (गंग वंश):** वे गंग वंश के जैन मंत्री थे, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों को शासन व्यवस्था में लागू किया और कई जैन मठों का पुनर्निर्माण कराया।

60. **धर्मपाल (पाल वंश):** वे एक जैन समर्थक सामंत थे, जिन्होंने जैन आचार्यों का सम्मान किया और जैन धर्म के प्रचार को बढ़ावा दिया। उन्होंने जैन धर्म के मंदिरों और विहारों का संरक्षण किया।

61. **राजा खारवेल (कलिंग):** खारवेल ने जैन धर्म को अपने राज्य में संरक्षित किया और जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए कई कदम उठाए। उन्होंने श्रवणबेलगोला में विशाल जैन मूर्ति का निर्माण करवाया और अपने राज्य में जैन आचार्यों को सम्मान दिया।

62. **पद्मनाभन (चालुक्य वंश):** चालुक्य वंश के मंत्री, जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार को बढ़ावा दिया और दक्षिण भारत में जैन मंदिरों का निर्माण कराया।

63. **विरमदेव (गंग वंश):** गंग वंश के सामंत, जिन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों को लागू किया और कई जैन मंदिरों का निर्माण कराया। उनका योगदान जैन धर्म के संरक्षण में महत्वपूर्ण था।

64. **धर्मपाल (पाल वंश):** पाल वंश के शासक और मंत्री, जिन्होंने जैन धर्म के प्रचार के लिए अनेक कार्य किए और जैन धर्म के आचार्यों का सम्मान किया।

65. **सम्राट विक्रमादित्य (गुप्त वंश):** हालांकि वे मुख्य रूप से बौद्ध धर्म के समर्थक थे, लेकिन वे जैन धर्म के प्रति भी सहिष्णु थे और जैन धर्म के प्रति सम्मान दिखाते थे। उन्होंने कई जैन मंदिरों का निर्माण करवाया और जैन आचार्यों को सम्मानित किया।

66. करकंधु राजा –

67. राजा अरविंद पार्श्वनाथ भगवान के चरित्र के आधार पर

68. राजा चेकट

69. गोल्लाचार्य राजा